



गुरु गोचर रिपोर्ट

देव-गुरु बृहस्पति के गोचर का आपके जीवन पर प्रभाव

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा (काल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 जुलाई 1992 • 09:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न • राशि • नक्षत्र	सिंह • वृश्चिक • ज्येष्ठा
वर्तमान दशा	सूर्य महादशा (2023–2029)
रिपोर्ट तिथि	24 सितम्बर 2026 • प्रातः 8:01

॥ पारस वाणी ॥

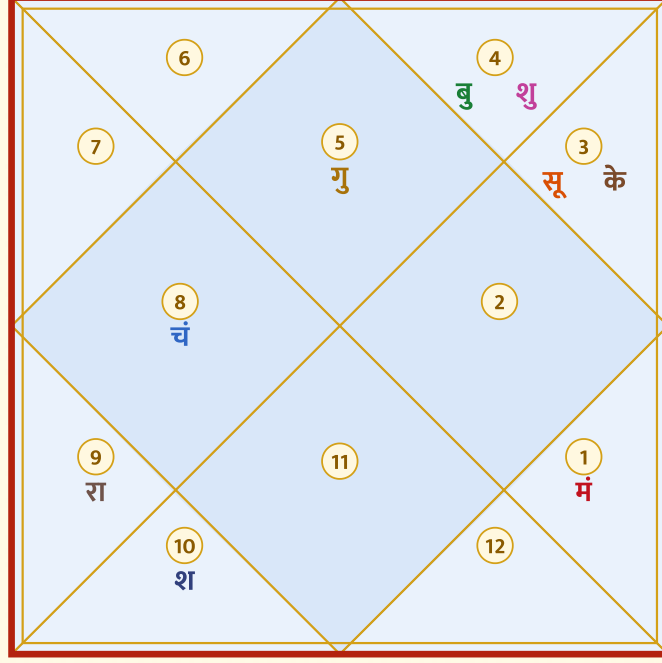
parasvani • वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है



जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुंडली परिचय



जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) · लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	सिंह	1	ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

विंशोत्तरी दशा — अंतर्दशा तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली म हा द शा • वर्तमान ◀ चिह्न से

सूर्य महादशा ◀

19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	23/02/2026	05/02/2027
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा

19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली यो गि नी • वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी ◀

स्वामी बुध • 5 वर्ष • 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	01/03/2026	19/02/2027
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी

स्वामी शनि • 6 वर्ष • 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035



गुरु गोचर — परिचय

अध्याय 1

गुरु गोचर — परिचय

अभय शर्मा जी, इस समय गुरु आपकी कुंडली के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण यात्रा पर हैं — और यह यात्रा आपके जीवन के कई द्वार एक साथ खोल रही है। **गुरु अभी कर्क राशि में गोचर कर रहे हैं, जो आपके जन्म-लग्न सिंह से बारहवाँ भाव है** — पर यह स्थिति जितनी साधारण दिखती है, उतनी है नहीं। इसके भीतर छुपा हुआ है एक गहरा परिवर्तन, जो धीरे-धीरे आपको एक नई दिशा की ओर ले जा रहा है।

गुरु कौन हैं और उनका गोचर क्यों इतना महत्वपूर्ण है

गुरु — जिन्हें बृहस्पति भी कहते हैं — नवग्रहों में सबसे शुभ माने जाते हैं। ज्ञान, विस्तार, भाग्य, संतान, गुरु-कृपा और धर्म — ये सब गुरु के कारकत्व हैं। **वे लगभग एक वर्ष तक एक राशि में रहते हैं**, इसलिए उनका गोचर दीर्घकालीन प्रभाव डालता है — एक दिन या एक महीने की बात नहीं, बल्कि पूरे जीवन-काल के एक अध्याय की बात। आपकी कुंडली में गुरु विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि **वे आपके लग्न भाव में मित्र राशि सिंह में बैठे हैं और उनकी अवस्था युवा है** — यानी वे अपना पूरा फल देने में सक्षम हैं। गजकेसरी योग भी आपकी कुंडली में इन्हीं के कारण बना है, जो यश और बुद्धि का प्रतीक है।

अभी गुरु कहाँ हैं — जन्म-लग्न और चंद्र राशि दोनों से देखें

2 जून 2026 से गुरु कर्क राशि में हैं और 31 अक्टूबर 2026 तक वहाँ रहेंगे। कर्क राशि में गुरु उच्च के होते हैं — यह उनकी सबसे प्रिय राशि है। शास्त्र में इस स्थिति को विशेष शुभ माना गया है।

जन्म-लग्न सिंह से देखें तो गुरु **बारहवें भाव में हैं** — व्यय, एकांत, विदेश और आंतरिक साधना का भाव। यहाँ गुरु का होना बाहरी चमक की बजाय **भीतरी गहराई** की ओर ले जाता है — यह समय है जब आप ऊपर से कम, भीतर से अधिक बदल रहे हैं।

चंद्र राशि वृश्चिक से देखें तो गुरु **नवम भाव में हैं** — भाग्य, धर्म और उच्च शिक्षा का भाव। यह स्थिति अत्यंत शुभ है। **चंद्र राशि से नवम में उच्च के गुरु का गोचर भाग्य का द्वार खोलता है** — मन के स्तर पर एक नई आस्था, एक नया रास्ता दिखने लगता है।

दृष्टि — गुरु किन भावों को देख रहे हैं

गोचर में गुरु की दृष्टि तीन भावों पर पड़ रही है। कर्क से वे **चतुर्थ भाव (तुला)** — **सुख व घर, षष्ठ भाव (धनु)** — **शत्रु व स्वास्थ्य**, और **अष्टम भाव (मीन)** — **परिवर्तन व गूढ़** पर दृष्टि डाल रहे हैं। जन्म-कुंडली में गुरु की दृष्टि पंचम, सप्तम और नवम पर भी है — यानी संतान, विवाह और भाग्य तीनों उनकी नज़र में हैं।

मुख्य बातें

- **गुरु अभी कर्क राशि में उच्च के हैं** — 2 जून 2026 से 31 अक्टूबर 2026 तक यह विशेष स्थिति।
- जन्म-लग्न से **बारहवें भाव का गोचर** — भीतरी परिवर्तन, एकांत-साधना, और अगले बड़े चरण की तैयारी।
- चंद्र राशि से **नवम भाव का गोचर** — भाग्य जागता है, मन को नई दिशा मिलती है।
- आपकी कुंडली में गुरु स्वयं युवा अवस्था में और लग्न में बैठे हैं — **गोचर गुरु जन्म-गुरु से संवाद में हैं**, इसलिए प्रभाव और गहरा होगा।
- **यह अध्याय आपके जीवन के 34वें वर्ष में एक बड़े मोड़ की पूर्वभूमिका है** — जो आगे के अध्यायों में विस्तार से खुलेगा।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

गजकेसरीसञ्जातस्तेजस्वी धनवान् भवेत् ।

मेधावी गुणसम्पन्नो राजप्रियकरो नरः ॥

गजकेसरी योग में जन्मा व्यक्ति तेजस्वी और धनवान होता है, बुद्धिमान और गुणों से भरा — तथा बड़े लोगों का प्रिय बनता है।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ३६



वर्तमान गुरु गोचर व स्थिति

अ ध्या य 2

अभय शर्मा जी, इस समय गुरु आपकी जन्म-कुंडली के **बारहवें भाव में गोचर कर रहे हैं** — कर्क राशि में, आश्लेषा नक्षत्र में। यह स्थिति बाहर से शांत दिखती है, पर भीतर से बहुत कुछ हिला रही होती है। यह "रुकाव" नहीं, **भीतरी तैयारी का समय** है।

गुरु अभी कहाँ हैं — और इसका क्या अर्थ है

गुरु 2 जून 2026 से कर्क राशि में हैं और 31 अक्टूबर 2026 तक यहीं रहेंगे। कर्क गुरु की उच्च राशि है — यानी गुरु इस समय अपने सबसे बलवान रूप में हैं। **उच्च के गुरु जब बारहवें भाव में आएँ, तो फल बाहर नहीं, भीतर मिलता है** — शांति, एकांत में कुछ सीखना, पुरानी उलझनें सुलझाना, और कभी-कभी ऐसी हानि जो आगे के लिए जगह बनाती है।

चंद्र राशि (वृश्चिक) से देखें तो गुरु नवें भाव में हैं — **भाग्य और धर्म का घर**। यह संयोग बहुत महत्वपूर्ण है। जन्म-लग्न से बारहवें भाव में गुरु थोड़ी व्यय और एकांत की बात करते हैं, पर चंद्र राशि से नवें में वही गुरु भाग्य जगाते हैं, आस्था बढ़ाते हैं, और मन को एक गहरा सहारा देते हैं।

दोनों को मिलाकर पढ़ें: यह समय भाग्य के दरवाज़े पर दस्तक का है — पर वह दरवाज़ा भीतर से खुलता है, बाहर से नहीं।

बारहवाँ भाव — यह "खराब" नहीं है

बारहवें भाव को लेकर मन में डर बैठ जाता है, पर सच यह है कि **उच्च का गुरु यहाँ आकर सबसे पहले वह हटाता है जो आपके काम का नहीं रहा** — चाहे वह पुराना रिश्ता हो, पुरानी सोच हो, या पुरानी आदत। यह प्रक्रिया कभी-कभी तकलीफ़देह लगती है, पर है यह सफ़ाई।

आपकी कुंडली में **गुरु पंचम और अष्टम दोनों भावों के स्वामी हैं** — और अभी वे बारहवें भाव में बैठे हैं। इसका अर्थ यह है कि इस समय संतान, गहरी शिक्षा, और जीवन के गूढ़ प्रश्न — ये सब मन में घूम रहे हैं। **कुछ निर्णय जो आप टालते आए हैं, वे अब मन के सामने आ रहे होंगे।**

शोधित अष्टकवर्ग में बारहवें भाव के बिंदु 5 हैं — न बहुत अधिक, न बहुत कम। इसलिए गुरु का यह गोचर बिल्कुल निष्फल नहीं, पर उतना प्रकट भी नहीं जितना लग्न या केंद्र में होता।

गुरु की दृष्टि — असली काम यहाँ हो रहा है

बारहवें भाव में बैठे गुरु की दृष्टि इस समय **चौथे, छठे और आठवें भाव** पर पड़ रही है।

- **चौथे भाव पर दृष्टि** — घर, माता, मन की शांति। इस समय घर में कुछ बड़ा तय हो सकता है — कोई ज़िम्मेदारी, कोई निर्णय। गुरु की दृष्टि यहाँ सुरक्षा देती है; चाहे हलचल हो, गहरी टूट नहीं होगी।

- **छठे भाव पर दृष्टि** — काम, स्वास्थ्य, प्रतिस्पर्धा। **यह दृष्टि बहुत काम की है।** आपके छठे भाव में शनि स्वराशि मकर में बैठे हैं। उन पर गुरु की दृष्टि पड़ना — यह शत्रु-विजय और रोग-विजय का संयोग है। कोई पुराना मुकाबला जो थका रहा था, उसमें अभी राहत आ सकती है। **अक्टूबर 2026 तक यह दृष्टि बनी है — इस समय का भरपूर उपयोग करें।**

- **आठवें भाव पर दृष्टि** — अचानक परिवर्तन, गूढ़ विद्या, पुरानी उलझनें। यहाँ गुरु की दृष्टि एक कवच की तरह काम करती है — कोई अप्रत्याशित झटका आए भी तो सँभलने की शक्ति बनी रहती है।

आगे क्या होगा — नवम्बर 2026 से बड़ा मोड़

31 अक्टूबर 2026 के बाद गुरु सिंह राशि में आएँगे — **आपके जन्म-लग्न में।** यह एक बड़ा मोड़ है। **लग्न में उच्च के गुरु का गोचर — यश, व्यक्तित्व, आत्मबल, और नई शुरुआत का समय होता है।** जो कुछ बारहवें भाव में पका है, वह सिंह राशि में आकर प्रकट होगा।

उस समय आपकी आयु 34-35 वर्ष होगी — करियर और जीवन के सबसे सक्रिय दौर में। यह संयोग बनाकर आया है।

मुख्य बातें

- **गुरु अभी बारहवें भाव में हैं — यह एकांत, भीतरी तैयारी और पुरानी चीज़ें हटाने का समय है, घबराने का नहीं।**
- चंद्र राशि से गुरु नवें भाव में हैं — मन में आस्था और भाग्य का भाव इस समय गहरा होगा।
- गुरु की दृष्टि छठे भाव पर — प्रतिस्पर्धा, स्वास्थ्य और शत्रु-विजय में अक्टूबर 2026 तक राहत।
- गुरु की दृष्टि चौथे भाव पर — घर और मन में उथल-पुथल हो, पर टूट नहीं होगी।
- **नवम्बर 2026 से गुरु लग्न में — यह आपके लिए एक नई शुरुआत का द्वार खुलने जैसा होगा।** उस समय के लिए अभी से तैयार रहें।



आप पर गुरु गोचर का फल

अध्याय 3

आप पर गुरु गोचर का फल

अभय शर्मा जी, इस समय गुरु आपके बारहवें भाव में बैठे हैं — और यह स्थिति जितनी बाहर से साधारण दिखती है, उतनी भीतर से उतनी ही गहरी है। यह समय आपकी कुंडली में एक बड़े मोड़ की तैयारी का है, जो अक्टूबर 2026 के बाद से धीरे-धीरे आकार लेगा।

बारहवें भाव में गुरु — यह रुकाव नहीं, जड़ें पकड़ने का समय है

गुरु अभी कर्क राशि में आपके बारहवें भाव में गोचर कर रहे हैं। बारहवाँ भाव व्यय, एकांत, विदेश और भीतरी जगत का भाव है। यहाँ गुरु का अर्थ यह नहीं कि कुछ बुरा हो रहा है — बल्कि इसका अर्थ है कि **जो ऊर्जा बाहर दिखती नहीं, वह भीतर इकट्ठी हो रही है।**

इस समय आपको लग सकता है कि मेहनत तो हो रही है पर परिणाम उस हिसाब से नहीं दिख रहे। कोई काम अधूरा छूट जाता है, कोई योजना देर से फलती है। यह गुरु की इस स्थिति का स्वाभाविक असर है — वे अभी आपको भीतर से बड़ा कर रहे हैं, बाहर से नहीं।

चंद्र राशि वृश्चिक से देखें तो गुरु अभी नवें भाव में हैं — यानी भाग्य, धर्म और गुरु-कृपा का भाव। यह अत्यंत शुभ स्थिति है। आपका मन जो भी अच्छे काम की ओर झुके, जो भी सच्ची दिशा खोजे — उसमें गुरु की कृपा इस समय पर्दे के पीछे से काम कर रही है। भले ही बाहर फल न दिखे, भीतर बीज पड़ रहे हैं।

शोधित अष्टकवर्ग में बारहवें भाव के बिंदु 5 हैं — बहुत कम नहीं, पर असाधारण भी नहीं। इसका अर्थ है कि गुरु यहाँ माध्यम बल से काम कर रहे हैं। खर्च होगा, पर बिखराव नहीं।

सिंह लग्न के लिए गुरु — आपके अपने ग्रह

आपका लग्न सिंह है और गुरु आपके पंचम व अष्टम भाव के स्वामी हैं। पंचम भाव बुद्धि, संतान और पूर्व-पुण्य का है, अष्टम परिवर्तन और गहराई का। **गुरु इस कुंडली में बारहवें भाव में जाकर भी अपना नाता पंचम और अष्टम से नहीं तोड़ते।**

इसका व्यावहारिक अर्थ यह है —

- बुद्धि और विवेक इस समय आपके सबसे बड़े साथी हैं। कोई भी बड़ा निर्णय इन्हीं से लें।
- कुछ पुराना समाप्त हो रहा है (अष्टम का संकेत), और कुछ नया बनने की तैयारी हो रही है।
- पंचम से गुरु की दृष्टि पाँचवें भाव पर भी पड़ रही है — अर्थात् जन्म-कुंडली में जो **गजकेसरी योग** बना है (चंद्र से केंद्र में गुरु), उसका प्रभाव मन पर अभी भी सक्रिय है। यश और समझ भले ही धीरे आएँ, पर आएंगे ज़रूर।

अक्टूबर 2026 — गुरु सिंह लग्न में आएंगे, और तब असली मोड़ शुरू होगा

31 अक्टूबर 2026 को गुरु कर्क से सिंह राशि में प्रवेश करेंगे — यानी आपके पहले भाव में, सीधे आपके लग्न पर। यह आपके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण गोचर है।

लग्न पर गुरु का गोचर व्यक्ति को भीतर से मज़बूत करता है — आत्मविश्वास लौटता है, स्वास्थ्य संभलता है, दिशा साफ़ होती है। और ध्यान दें — **गुरु नवांश (D9) में भी कन्या लग्न में पहले भाव में हैं** — यह वर्गोत्तम के समान स्थिति है, जो इस गुरु-गोचर को और अधिक बलशाली बनाती है।

साथ ही इसी समय के आसपास — फ़रवरी 2027 से — सूर्य की अंतर्दशा में बुध की अंतर्दशा आरंभ होगी। बुध वाणी, व्यापार और लेन-देन के ग्रह हैं। योगिनी में भी भद्रिका (बुध) चल रही है। अर्थात् नवंबर 2026 से फ़रवरी 2027 के बीच का समय आपके लिए **निर्णायक मोड़** हो सकता है — करियर, आर्थिक स्थिति या किसी बड़े संबंध में।

अभी क्या करें — इस समय की माँग

गुरु अभी बारहवें भाव में हैं और साथ में **सूर्य महादशा में शनि की अंतर्दशा** चल रही है (फ़रवरी 2027 तक)। शनि आपके छठे भाव में अपनी राशि मकर में हैं — यानी "हर्ष विपरीत राजयोग" बना है। इसका फल यह है कि **कठिनाइयाँ आपको तोड़ने नहीं, निखारने आती**

हैं। पर इसके लिए धैर्य और नियम ज़रूरी है।

इस समय का सबसे सही काम —

- **शनि के अनुसार चलें:** समय की पाबंदी, हर दिन एक काम बिना नागा, शॉर्टकट से दूरी। यही इस दौर की असली साधना है।
- **गुरु के साथ चलें:** कुछ पढ़ते रहें, किसी से सीखते रहें, और जो जानते हों उसे किसी को बताएँ। यह गुरु को प्रसन्न रखने का सबसे सीधा रास्ता है।
- **एकांत को दुश्मन मत समझें:** बारहवाँ भाव एकांत का भी है — थोड़ा समय अपने साथ बिताएँ, भले ही 15-20 मिनट का मौन हो। केतु आपके ग्यारहवें भाव में हैं (जन्म-कुंडली में), और ध्यान या मौन से वे शांत रहते हैं।

रत्न की बात करूँ तो **माणिक** इस समय सबसे उपयुक्त है — यह आपका जीवन-रत्न भी है और सूर्य महादशा में और भी प्रासंगिक। इसे आप koustubhgems.com से प्रमाणित लेकर धारण कर सकते हैं।

मुख्य बातें

- **अक्टूबर 2026 तक गुरु बारहवें भाव में हैं** — यह भीतरी तैयारी का समय है, बाहरी दिखावे का नहीं।
- **चंद्र राशि से गुरु नवें भाव में हैं** — भाग्य व धर्म की दृष्टि से यह समय शुभ संकेत देता है।
- **31 अक्टूबर 2026 से गुरु सिंह (लग्न) में आएंगे** — तब आत्मविश्वास, स्वास्थ्य और दिशा में स्पष्ट सुधार होगा।
- **नवंबर 2026 से फ़रवरी 2027 के बीच का समय** करियर या आर्थिक क्षेत्र में एक बड़ा निर्णायक मोड़ ला सकता है।
- **धैर्य, नियम और सीखते रहना** — यही इस पूरे दौर की असली कुंजी है।



जीवन-क्षेत्रों पर प्रभाव

अ ध्या य 4

जीवन-क्षेत्रों पर प्रभाव

अभय शर्मा जी, गुरु अभी आपके बारहवें भाव में हैं — और यह स्थिति आपके जीवन के हर क्षेत्र को अलग-अलग तरीके से छू रही है। कहीं रुकाव है, कहीं भीतरी पकाव — और कहीं एक ऐसा बदलाव जो दिखता नहीं, पर जड़ों में हो रहा है।

करियर और काम-काज

इस समय काम में मेहनत दिखती है, पर पहचान देर से मिलती है — यह बारहवें भाव में गुरु का स्वाभाविक फल है। आपके दशमांश (D10) में गुरु बारहवें भाव (मकर राशि) में ही हैं, जो यह पुष्ट करता है कि करियर में अभी प्रत्यक्ष उन्नति का समय नहीं, बल्कि **नींव मज़बूत करने का समय** है।

चंद्र कुंडली से देखें तो गुरु दसवें भाव (कर्म-भाव) में हैं — यह एक राहत की बात है। मन और भावनाओं के स्तर पर आप अपने काम में लगे हैं, और यह लगाव रंग लाएगा। **अक्टूबर 2026 के बाद, जब गुरु वृश्चिक की ओर बढ़ेंगे (31 अक्टूबर 2026), तब चंद्र राशि से यह ग्यारहवें भाव में आएँगे — और काम का फल, लाभ व पहचान सामने आने लगेगी।**

अभी सूर्य-शनि की अंतर्दशा चल रही है (फ़रवरी 2027 तक) — शनि आपकी कुंडली में छठे भाव में स्वराशि में हैं, यानी कर्म-क्षेत्र में श्रम और अनुशासन की माँग है। जो काम आज धैर्य से करेंगे, उसका फल फ़रवरी 2027 में सूर्य-बुध की अंतर्दशा आने पर मिलेगा।

धन और आर्थिक स्थिति

आपके दूसरे भाव (धन-भाव) के स्वामी बुध बारहवें भाव में हैं — और शनि की दृष्टि आठवें भाव पर है। **इस समय धन का आना-जाना बना रहता है — खर्च नियंत्रण में रखना ज़रूरी है।**

एक अच्छी बात — आपके ग्यारहवें भाव (लाभ-भाव) के शोधित अष्टकवर्ग बिंदु 3 हैं, जो कम हैं; पर गुरु की दृष्टि अभी पाँचवें, सातवें और नवें भाव पर है। **नवें भाव (भाग्य) पर गुरु की दृष्टि यह बताती है कि अचानक कोई अच्छा अवसर, कोई सहयोग या कोई अप्रत्याशित लाभ आ सकता है — विशेष रूप से नवम्बर-दिसम्बर 2026 में जब गुरु वृश्चिक राशि में प्रवेश के करीब होंगे।**

बड़े निवेश या जोखिम भरे वित्तीय निर्णय अभी टालें — फ़रवरी 2027 के बाद का समय उसके लिए बेहतर रहेगा।

संबंध और विवाह

आपके सातवें भाव (विवाह-भाव) पर गुरु की सीधी दृष्टि है — **यह एक बड़ी शुभ बात है।** सप्तम भाव के स्वामी शनि छठे भाव में हैं, जो आम तौर पर रिश्तों में थोड़ी कठिनाई या दूरी लाता है — पर गुरु की दृष्टि इस भाव को सँवारती है।

नवांश (D9) में गुरु कन्या राशि में लग्न में हैं — यह बताता है कि **रिश्ते में गहराई और समझ बन रही है।** यदि विवाह हो चुका है, तो इस समय जीवनसाथी के साथ खुलकर बात करना, एक-दूसरे को समझना — यही सबसे बड़ा उपाय है। यदि विवाह की बात चल रही है, तो **अक्टूबर 2026 से फ़रवरी 2027 के बीच का समय अनुकूल चर्चा का है।**

शुक्र अभी तुला राशि में गोचर कर रहे हैं (6 नवम्बर 2026 तक) — यह रिश्तों में मिठास और सामंजस्य लाता है। इस अवधि में प्रेम-भाव व्यक्त करने का समय मत छोड़िए।

स्वास्थ्य और मन

आपके चंद्र वृश्चिक राशि में नीच के हैं और चतुर्थ भाव में बैठे हैं — मन कभी-कभी भारी रहता है, चिंताएँ घर कर लेती हैं। **बारहवें भाव में गुरु का गोचर मन को अंतर्मुखी बनाता है — यह कमज़ोरी नहीं, यह एक संकेत है कि भीतर झाँकने का समय आया है।**

शनि वक्री होकर मीन राशि में आठवें भाव में गोचर कर रहे हैं (11 दिसम्बर 2026 को मार्गी होंगे) — यह थकान, पुराने रोगों का उभार या नींद में अनियमितता ला सकता है। **रोज़ 20-25 मिनट खुली हवा में चलना और सोने-जागने का समय पक्का करना — ये दो काम इस पूरे दौर में आपको सँभाले रखेंगे।**

मुख्य बातें

- करियर में अभी श्रम का समय है, फ़रवरी 2027 से पहचान मिलनी शुरू होगी — सूर्य-बुध अंतर्दशा का यही वादा है।
- गुरु की सातवें भाव पर दृष्टि रिश्तों को सँभाले हुए है — विवाह व साझेदारी के लिए अक्टूबर-नवम्बर 2026 अनुकूल है।
- नवें भाव (भाग्य) पर गुरु की दृष्टि एक अप्रत्याशित अवसर या सहयोग का संकेत देती है — नज़र खुली रखिए।
- धन-व्यय पर नियंत्रण ज़रूरी है — बड़े निर्णय फ़रवरी 2027 के बाद लें।
- मन की देखभाल सबसे पहले — एकांत को दिशा दीजिए, बोझ मत बनने दीजिए; यही इस दौर की असली साधना है।



आगामी गुरु गोचर (अगले 2-3 वर्ष)

अ ध्या य 5

अभय शर्मा जी, अगले दो-तीन वर्ष आपकी कुंडली में एक बड़ा मोड़ लेकर आने वाले हैं। **गुरु अक्टूबर 2026 के अंत में कर्क से निकलकर सिंह राशि में आएँगे — और सिंह आपका लग्न है।** यह केवल राशि-परिवर्तन नहीं, यह आपके जीवन के मंच पर रोशनी लौटने जैसा है।

गुरु का कर्क से विदा — अभी का यह अंतिम पड़ाव (अक्टूबर 2026 तक)

गुरु अभी कर्क राशि में हैं, जो आपके बारहवें भाव में पड़ती है। 31 अक्टूबर 2026 तक यह स्थिति रहेगी। बारहवाँ भाव व्यय, एकांत और भीतरी तैयारी का भाव है — और इसी में गुरु बैठे हैं। यह समय बाहर से उतना नहीं दिखता जितना भीतर से आपको बदल रहा है। इस अवधि के शोधित अष्टकवर्ग बिंदु पाँच हैं — बहुत कम नहीं, पर असाधारण भी नहीं। इसलिए यह समय "बुरा" नहीं, बस "शांत" है।

13 दिसम्बर 2026 को गुरु वक्री होंगे — और इसके पहले, **31 अक्टूबर 2026 को सिंह में प्रवेश करेंगे।** यानी अक्टूबर के अंत तक ही यह बारहवें भाव वाला दौर समाप्त होगा।

गुरु का लग्न में प्रवेश — नवम्बर 2026 से एक नई शुरुआत

31 अक्टूबर 2026 से गुरु आपके पहले भाव — यानी लग्न, सिंह राशि — में आ जाएँगे। सिंह लग्न के लिए गुरु पंचम व अष्टम भाव के स्वामी हैं। पंचम के स्वामी होने के नाते वे एक शुभ ग्रह हैं — और लग्न में आने पर वे आपके व्यक्तित्व, स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और समाज में उपस्थिति को सीधे बल देते हैं।

आपकी जन्म-कुंडली में गुरु पहले ही भाव में मित्र-राशि सिंह में हैं — और गोचर का गुरु भी वहीं आएगा। यह **वर्गोत्तम जैसी स्थिति नहीं है, पर जन्म-स्थान पर गोचर का मिलन** एक विशेष संयोग जरूर है। इससे आपका जन्म का गुरु और अधिक जागृत होगा।

चंद्र कुंडली से देखें तो गुरु आपके दसवें भाव में आएँगे — यश, कर्म और सामाजिक पहचान का भाव। **यह संकेत है कि नवम्बर 2026 से आपके काम की पहचान बढ़ने लगेगी।** जो मेहनत पिछले एक-दो वर्षों में चुपचाप हुई है, वह अब दिखने लगेगी।

भाव एक के शोधित अष्टकवर्ग बिंदु चार हैं — बहुत अधिक नहीं, इसलिए यह फल धीरे-धीरे खुलेगा, एक ही दिन में नहीं। पर खुलेगा जरूर।

2027 — गुरु की वक्री चाल और उसके बाद का मार्ग

13 दिसम्बर 2026 को गुरु वक्री होंगे और कुछ समय तक सिंह में ही रहेंगे। वक्री गुरु भीतर की ओर देखते हैं — यह समय आत्म-परीक्षण, पुराने निर्णयों पर पुनर्विचार और जो अधूरा रह गया उसे पूरा करने का होता है। यह घबराने की बात नहीं — बल्कि यह गुरु का एक और उपहार है कि वे लग्न में बैठकर आपको भीतर से मजबूत करने का काम पूरा करें।

2027 के मध्य में गुरु मार्गी होकर आगे बढ़ेंगे और सिंह में पूरा वर्ष बिताएँगे। इस दौरान **सूर्य-बुध अंतर्दशा (फ़रवरी 2027 से दिसम्बर 2027) और सूर्य-केतु अंतर्दशा (दिसम्बर 2027 से अप्रैल 2028) चलेगी।** बुध आपके बारहवें भाव के स्वामी हैं — इस अंतर्दशा में खर्च व यात्रा की संभावना रहेगी, पर गुरु का लग्न में होना उसे संतुलित रखेगा। केतु की अंतर्दशा में अध्यात्म और एकाग्रता बढ़ेगी।

2028 — सिंह के बाद कन्या में गुरु और आगे का दृश्य

2028 के आसपास गुरु कन्या राशि में जाएँगे — यह आपका दूसरा भाव है, धन, वाणी और कुटुंब का भाव। **यह आपके जीवन के लिए एक बहुत अनुकूल गोचर होगा।** दूसरे भाव में गुरु का अर्थ है — आय में वृद्धि, परिवार में शुभ समाचार और आपकी बात का समाज में वजन बढ़ना।

चंद्र कुंडली से यह गुरु ग्यारहवें भाव में होंगे — लाभ और इच्छापूर्ति का भाव। यह दोहरा संकेत बहुत शुभ है।

दूसरे भाव के शोधित अष्टकवर्ग बिंदु तीन हैं — थोड़े कम हैं, इसलिए फल स्वतः नहीं आएगा, प्रयास से आएगा। पर आएगा जरूर।

इसी समय **अप्रैल 2029 से चंद्र महादशा आरंभ होगी** — और आप तब लगभग 37 वर्ष के होंगे। चंद्र महादशा और गुरु का दूसरे-तीसरे भाव में होना — यह मिलन आपके जीवन में एक नया अध्याय लिखेगा, जिसमें भावनात्मक स्थिरता और भौतिक प्रगति दोनों साथ चल सकती हैं।

मुख्य बातें

- **31 अक्टूबर 2026 से गुरु आपके लग्न (सिंह) में आएँगे** — आत्मविश्वास, यश और व्यक्तित्व के लिए यह सबसे शुभ गोचर है।
- **चंद्र कुंडली से यह दसवाँ भाव है** — करियर में पहचान और सम्मान मिलने की शुरुआत नवम्बर 2026 के बाद होगी।
- **2027 में वक्री गुरु का दौर आत्म-परीक्षण का है** — घबराएँ नहीं, यह फल पकाने का समय है।
- **2028 में गुरु का दूसरे भाव में गोचर** धन, वाणी और कुटुंब में शुभता लाएगा — प्रयास से फल मिलेगा।
- **अप्रैल 2029 में चंद्र महादशा और गुरु गोचर का मिलन** — यह संयोग आपके जीवन का एक नया, सुंदर मोड़ होगा।



शुभ काल व अवसर

अध्याय 6

शुभ काल व अवसर

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में अभी एक असाधारण मोड़ आने की तैयारी है — **अक्टूबर 2026 के अंत से गुरु सिंह राशि में प्रवेश करेंगे, जो आपका जन्म-लग्न है।** यह क्षण महज राशि-परिवर्तन नहीं, यह आपके जीवन के एक नए अध्याय का द्वार खुलना है।

अभी का सबसे बड़ा शुभ काल — अक्टूबर 2026 के बाद

31 अक्टूबर 2026 के बाद से गुरु आपके लग्न भाव में विराजेंगे। लग्न-स्थ गुरु — यह गजकेसरी योग जैसा बल देता है व्यक्तित्व को, और आपकी कुंडली में गुरु पहले से युवा अवस्था में हैं, बल भरपूर। यह स्थिति बताती है कि अगले एक-डेढ़ वर्ष में आप जो भी काम उठाएँगे, उसमें आत्मविश्वास और परिणाम दोनों मिलेंगे। करियर, स्वास्थ्य, नई शुरुआत — तीनों के लिए यह काल अनुकूल है।

साथ ही ध्यान दें — **गुरु की लग्न पर दृष्टि पंचम (बुद्धि, संतान), सप्तम (जीवनसाथी) और नवम (भाग्य) पर पड़ेगी।** इन तीनों भावों से जुड़े विषयों में — कोई पढ़ाई, परिवार में शुभ समाचार या कोई महत्वपूर्ण निर्णय — अक्टूबर 2026 के बाद का समय विशेष उपयुक्त है।

फ़रवरी 2027 — दशा भी बदलेगी, दिशा भी

फ़रवरी 2027 से सूर्य-बुध अंतर्दशा आरंभ होगी। बुध आपके बारहवें और ग्यारहवें के भावेश हैं — वाणी, लेखन, संचार और लाभ के कारक। यदि आप किसी लेखन, शिक्षण, व्यापार-संचार या डिजिटल कार्य से जुड़े हैं, तो **फ़रवरी से दिसम्बर 2027** का काल आपके लिए विशेष उत्पादक रह सकता है।

योगिनी दशा में भद्रिका (बुध-स्वामी) 2029 तक चल रही है — बुद्धि, वाणी और व्यापार की गति इस पूरे काल में बनी रहेगी। **जो काम लिखित हो, बौद्धिक हो, या संवाद पर टिका हो — उसके लिए यह दो-तीन वर्ष बेहतरीन खिड़की हैं।**

सितम्बर-अक्टूबर 2026 — अभी के सबसे शुभ सप्ताह

20 से 23 सितम्बर 2026 के बीच सूक्ष्म दशा में चंद्र-गुरु का संयोग है। गुरु आपके पंचमेश व अष्टमेश हैं, और इस कुंडली में वे युवा अवस्था में बलवान हैं। यह छोटी खिड़की है, पर किसी महत्वपूर्ण बातचीत, निर्णय लेने या नई योजना की नींव रखने के लिए यह कुछ दिन शुभ हैं।

14-17 अक्टूबर 2026 के बीच मंगल-गुरु सूक्ष्म दशा आएगी। मंगल आपके नवमेश हैं, स्वराशि में बैठे — भाग्य और साहस का स्वामी। इस खिड़की में कोई साहसिक पहल, यात्रा या दीर्घकालिक निर्णय लेना शुभ फल दे सकता है।

मुख्य बातें

- **अक्टूबर 2026 के अंत** से गुरु लग्न में — यह आपकी कुंडली का सबसे बड़ा शुभ काल; व्यक्तित्व, स्वास्थ्य और नई शुरुआत के लिए आदर्श।
- **20-23 सितम्बर 2026** — चंद्र-गुरु सूक्ष्म दशा; बौद्धिक या पारिवारिक निर्णयों के लिए अनुकूल।
- **14-17 अक्टूबर 2026** — मंगल-गुरु सूक्ष्म दशा; साहसिक पहल व यात्रा के लिए शुभ।
- **फ़रवरी-दिसम्बर 2027** — बुध अंतर्दशा; लेखन, संचार व व्यापार के लिए विशेष उत्पादक।
- जो भी बड़ा कदम उठाना हो — अक्टूबर 2026 के बाद उठाएँ; यह समय आपके पक्ष में है।



गुरु को बल देने के उपाय

अ ध्या य 7

गुरु को बल देने के उपाय

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में गुरु पहले भाव में बैठे हैं — लग्न में, मित्र राशि सिंह में, युवा अवस्था में। यह एक विशेष स्थिति है। **गुरु यहाँ न केवल पंचमेश और अष्टमेश हैं, बल्कि लग्न में बैठकर आपके पूरे व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।** इन्हें बल देना सीधे आपकी

बुद्धि, भाग्य, संतान-सुख और आत्म-विश्वास को मजबूत करना है।

गुरु के साथ मिलकर जीना — सबसे बड़ा उपाय

गुरु का सबसे गहरा उपाय कोई पूजा नहीं — यह है कि आप उनके स्वभाव के अनुसार जीएँ।

- **रोज़ कुछ सीखिए और कुछ सिखाइए।** गुरु ज्ञान के ग्रह हैं। चाहे दस मिनट हो — कोई किताब, कोई विषय, कोई बात जो मन को बड़ा करे। और जो जानते हैं, वह किसी को सिखाइए — बिना दिखावे के।
- **संयम रखिए — विशेषकर वाणी और भोजन में।** गुरु पहले भाव में हैं, इसलिए जो बोलते हैं वह सीधे आपके व्यक्तित्व की छाप बनाता है। वाणी में सत्य और मधुरता — यही गुरु की सबसे बड़ी पूजा है।
- **गुरु-जनों का आदर करें।** माता-पिता, शिक्षक, बड़े — इनसे सम्बंध जितना सहज रहेगा, गुरु उतने बलवान होंगे।

दिनचर्या में एक छोटा क़दम

हर गुरुवार को पीले वस्त्र पहनें, पीला भोजन लें — चने की दाल, पीली मिठाई, केला। यह छोटी बात है, पर गुरु के दिन उनके रंग में रहना एक सजग स्मरण है।

गुरु की दृष्टि आपके पाँचवें, सातवें और नवम भाव पर पड़ती है — संतान, विवाह और भाग्य तीनों पर। इसलिए गुरु को जो बल मिलेगा, वह इन तीनों क्षेत्रों में आपको सीधे महसूस होगा।

मंत्र — कब और कितना

गुरु का बीज मंत्र "**ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः**" — गुरुवार को सूर्योदय के बाद, पूर्व दिशा में बैठकर, **108 बार** जपिए। मन शांत हो तो माला से, समय कम हो तो मन-ही-मन।

रत्न — माणिक पहले, पुखराज बाद में

इस समय आपकी **सूर्य महादशा** चल रही है और माणिक आपका जीवन-रत्न भी है व अभी का सुझाया हुआ रत्न भी। **माणिक पहनिए** — यह अभी सबसे उपयुक्त है।

पुखराज (गुरु का रत्न) भविष्य में जब गुरु की दशा आए, तब लेने पर विचार करें। अभी माणिक ही प्राथमिकता है। रत्न प्रमाणित लें —

मुख्य बातें

- **गुरु के साथ चलना** = रोज सीखना, सिखाना, वाणी में संयम, गुरुजनों का आदर।
- गुरुवार को पीला रंग व चने की दाल — छोटा पर सजग उपाय।
- **"ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः"** — गुरुवार, 108 बार।
- अभी **माणिक** पहनना सबसे उचित है — यह सूर्य महादशा व गुरु दोनों के लिए काम करता है।
- गुरु को दिया बल सीधे पाँचवें, सातवें और नवम भाव को स्पर्श करेगा — बुद्धि, भाग्य और रिश्तों में असर दिखेगा।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।

एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ गुरु गोचर रिपोर्ट ❖ अभय शर्मा (काल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।